

॥ काशनाम ॥

॥ सुमनाम ॥

॥ मायनाम ॥

॥ धवनाम ॥

॥ अविनाम ॥

॥ शिवनाम ॥

॥ काशनाम ॥

॥ धवनाम ॥

॥ मायनाम ॥

॥ सुमनाम ॥

॥ काशनाम ॥

॥ धवनाम ॥

॥ मायनाम ॥

॥ सुमनाम ॥

॥ काशनाम ॥

॥ धवनाम ॥

॥ मायनाम ॥

॥ सुमनाम ॥

॥ काशनाम ॥

॥ धवनाम ॥

॥ मायनाम ॥

॥ सुमनाम ॥

ॐ सोमस्य अश्विनः सप्तमः
होवा। ध्या। गुहा रु प्रभे
ॐ शक्तिरु भिमकि ॥
ॐ अनिरु रु डाये ॥
ॐ सोमस्य द्वा पादि ॥
ॐ अग्नयग सोम रु वाग्ने ॥
ॐ नलमाग यो दगा ॥
ॐ सोम। धन। रदयो ॥

आद्याहमदि॥ सां ऊषाप्रत्या
त्रयोविंशत्युत्तरार्द्धे
॥

कर्मयोगो नाम धर्मः ॥
 दशभुजः ॥
 मातापितृभ्यो नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥

आता प्रसन्न ४॥

शिवशिव

सप्तमोऽध्यायः ॥

भवादिवाच्येन ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

卷之二十一

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

卷之八

卷之八

卷之七

正

卷之三

नारायणाय नमः

विष्णु

不

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥

卷之五

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ स्वाहा दिवा॥

[illegible]

नाम नमः २ पूर्य नमः २

ॐ नमो भगवते ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं नमो भगवते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमि ॥

636 卷之六

卷之三

636
四
二
二

卷之三

卷之三

[illegible]

卷之四

卷之四

सिद्धिदायि ॥

कामानां ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ विष्णुस्तु ॥

ॐ नमस्तु ॥ ॐ वज्रसाम ॥

अनामकचलस्रज्जदिनधू
॥ आद्य ॥ अद्रमागेन ॥

कवमलंखसुखे ॥ अलकं
पगदासनंवाय ॥ लपगस
अदाव वज्रिखानकं ॥
पुजायायकं ॥

अदिह्यायनीववाधिरवसा
न अदिप्रयाधिरवनाय गाय
उदमा लनं २ वज्रि ॥ अतग
नाथ ॥ हलाद्य ॥ नक वनम
॥ कदलापनम वज्रं ॥ न
कदल ॥ अथदीप ॥ अतग
नाथ ॥ ॐ नमः ॥

ॐ नमस्तु ॥ अनामकचलस्रज्जदिनधू
॥ आद्य ॥ अद्रमागेन ॥
कवमलंखसुखे ॥ अलकं
पगदासनंवाय ॥ लपगस
अदाव वज्रिखानकं ॥
पुजायायकं ॥

अनामकचलस्रज्जदिनधू
कवमलंखसुखे ॥ अलकं
पगदासनंवाय ॥ लपगस
अदाव वज्रिखानकं ॥
पुजायायकं ॥

॥ अथ प्रया कदको ॥ अथ २
पुजाहृमि वाक्य ॥

वज्रिद्रकाककात्रगयायकं ॥

अनामकचलस्रज्जदिनधू ॥

अथार्थ ॥ ॐ नमस्तु ॥ अथ २

नमस्तु ॥ अथ ॥ नमस्तु ॥ अथ २

॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ २

पुजाहृमि वाक्य ॥

अनामकचलस्रज्जदिनधू ॥

अथार्थ ॥ ॐ नमस्तु ॥ अथ २

नमस्तु ॥ अथ ॥ नमस्तु ॥ अथ २

॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ २

पुजाहृमि वाक्य ॥

अनामकचलस्रज्जदिनधू ॥

[illegible][illegible]

समहंसं च दद ॥ आशीर्वाद ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ पून ॥ निद्रा ॥ ॐ
यथा दीयमानमिदमन्नमं कल्पसिद्धिरस्तु ॥ सुति ॥ ॐ (१) याय दति विधाय सा विधे
नायायर्जवेषूवं द्याय आसय धर्मि मं न वि (१) तायाय न द्याय जा ॥ धर्मं न न मन
वक्रिज ० मं पीला कि द (१) दानं ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
ॐ ॥ तं ॥ वा ॥ पूजा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
मनं न म ॥ पूजा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
ॐ ॥ पीत वरुं कादीया ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
ॐ ॥ दान ॥ कर्म रूच न ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥

अनुवृत्त ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
विद वताय ॥ वा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
यत ॥ मं किं यय कर्म ॥ कर्म विध ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
अमक गाजाय अमक ना म म म ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
अनं दान न रुगा वान् ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
लं वत ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं न यद न मं दमन ता निर्यं न माया धन ॥ ॥

वेदासिद्धिपुत्रमनुलगतप्रत्ययविषयः ॥ यथाज्ञातः ॥ शुद्धदेवता
 सृष्टीतावप्रदाहवन्दु ॥ ॥ ८१ ॥ मास ॥ वा ॥ पूजा ॥ ॐ शिरोधार्यं यथाधि
 धिदेवताय प्रजापतिप्रत्ययधिदेवताय ॐ नमः सनतनमः ४ पूजा २ ॥ एवं ह कार्य ॥ ह
 वितयन्दनं २ ॥ हवितयस्तु यवीतनय २ ॥ धूप २ ॥ हवितवह्निकादीया २ ॥ ॥
 दत्ता ॥ कंकुमयन्दनं २ ॥ मल्लिकादूर्ध्व २ ॥ गुग्गुलधूप २ ॥ ॥ अर्घ्याभादि ॥ वी
 हिसपूजा ॥ ॐ शिरोधार्यं यथाधिनमः ॥ यथापतिप्रत्ययधिदेवताय
 नमः ॥ वा ॥ गवामं गामृतिष्ठति ॥ सुवनातिष्ठति ॥ यस्मात् ॥ यस्मात् ॥ यस्मात् ॥

न ॥ ॐ ह लांकुयप्रतिष्ठ ॥ यस्मात् ॥ यथिवीमर्चो ॥ धन ४ कर्माववन्दन ॥ सच ॥ यद
 त्रानिष्ठ ॥ मत्त ४ लार्किप्रयक्तु ॥ कर्णविश ॥ यततु ॥ गवी दानं दानं ॥ वा ॥ दद
 त्व ॥ अय ॥ अर्घ्यादि ॥ यथावाक्य ॥ यत्तु ॥ कलाशेकि ॥ नैयप्रदवतासृष्टीयर्थ ॥ अ
 मकवदाध्यायित ॥ अमक ॥ गानाय ॥ अमकनाम ॥ मा ॥ वा ॥ य ॥ मां ॥ कर्णगां ॥ उरु
 मरुसंयदद ॥ अनदाननरुगवान ॥ शिरोधार्यं यथाधिनमः ॥ सृष्टीतावप्रदाहवन्दु ॥ वा ॥ हवि
 ॥ ॐ कोदात ॥ लयत ॥ ॐ दकोमको मयत ॥ ॐ काम ४ समुद्रात ॥ यतत मायवादि ॥ य
 र्दुष्टमर्हसंयदद ॥ लं ददि ॥ ॐ नैयप्रदवतासृष्टीयर्थ ॥ यथाधिनमः ॥

वतं यथा शुद्धादिकिंशुद्धमहं संयुज्जम् ॥ अङ्गीचोद ॥ ॐ नमो देवा ॥ दूनमा नि
श्राव ॥ ॐ नमो श्रुत्रायत्यादि ॥ यथादीयमानमिदमन्तरसंकलासिद्धिबहु ॥ मुनि ॥
शुद्धीकाश्रयसंरुवसमधिपसोबाह्यादि ॥ यथा धूपं वायुमूदयमन्तरकालं तजामि
जावन्नरुं । दीर्घशक्तिपश्चिममिति मयं याशापतिपत्यधिं धूपिं वायुवल्लयुदं ॥ क
जनमा निर्यमत्तं । गायदं ॥ यथावाश्यादि ॥ नमो श्रुत्रवदंतासूयातावनदा रुवन्तु ॥
॥ वा ॥ म्वात ॥ वा ॥ पूजा ॥ ॐ ब्राह्मदेवकालाधिदेवताय सर्वस्य सिद्धिदेवताय ॐ
दमासनं नमः ॥ पूषा ॥ ॥ नमो देवाय ॥ कृष्णवन्दनं ॥ कृष्णजन्म ॥ तद्वदं ॥

कृष्ण ॥ कृष्णवर्तितादीधानममा अङ्गीचोद ॥ ॥ नमो नमो ॥ कृष्णवन्दनं ॥
मूकपूषा ॥ लाक्षाधूपं ॥ वाहिसुपूजा ॥ ॐ ब्राह्मदेवकालाधिदेवताय सर्वस्य ॥
सर्वस्य सिद्धिदेवताय ॥ वाक् ॥ ॐ यस्मादायसं कर्माणि तवाधीना निमज्जन्ता हला
मन्त्रा यथादीनि अतश्च किंच यच्छमं ॥ कृष्णवन्दनं ॥ एतत्स्वप्नदानं दातव्यं ॥ वा ॥ द
दं ॥ अय ॥ अङ्गीचोद ॥ यथावाक् ॥ शृङ्गकालाधिदेवताय सर्वस्य अम
कदवाध्यायिनी अमकालाधिदेवताय सर्वस्य अमकालाधिदेवताय सर्वस्य अम
हंसं पदं ॥ अनेदानं नमः ॥ कृष्णवन्दनं ॥ कृष्णजन्म ॥ तद्वदं ॥ ॐ नमो

यन्त्र॥ नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥
जाताय रुक्मिका नक्षत्राय अक्षय गात्राय एतदर्थं वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥
माताय आ॥ एतय रु॥ दक्षिणैः मुखाय अक्षिदवता माय॥ एतय विदवता ॥ ४॥ गो तामज
मय मायणी कन्दल॥ अक्षय कवगो मदिताय उषाद्य ४ खाहा ॥ ५॥ नमः॥ सुति ॥ दि
मणीय मृगाला ४ काण यथा निशा यिदा ॥ गो को वाहिनी रुक्मि मदीक्षि किं प्रम कुरु ॥
॥ ॥ अ॥ नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥
माताय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय

लक्ष्मणाय दक्षिणैः मुखाय अक्षिदवता माय॥ एतय विदवता ॥ ४॥ गो तामज
मय मायणी कन्दल॥ अक्षय कवगो मदिताय उषाद्य ४ खाहा ॥ ५॥ नमः॥ सुति ॥ दि
मणीय मृगाला ४ काण यथा निशा यिदा ॥ गो को वाहिनी रुक्मि मदीक्षि किं प्रम कुरु ॥
॥ ॥ अ॥ नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥
माताय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय
लक्ष्मणाय दक्षिणैः मुखाय अक्षिदवता माय॥ एतय विदवता ॥ ४॥ गो तामज
मय मायणी कन्दल॥ अक्षय कवगो मदिताय उषाद्य ४ खाहा ॥ ५॥ नमः॥ सुति ॥ दि
मणीय मृगाला ४ काण यथा निशा यिदा ॥ गो को वाहिनी रुक्मि मदीक्षि किं प्रम कुरु ॥
॥ ॥ अ॥ नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥ वा॥ उ॥ सो माय को नमः॥
माताय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय अक्षय गात्राय

[illegible][illegible]

न। अङ्गुलिं धादि ॥

॥ १ ॥

महिषदान ॥ वाक् ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ यावाश्च महिषीशु रा। महिषीदानमा
हात्मा साधुमसर्वकामद ॥ ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ वाक् ॥ लवणस्य यदातोत्र तिलानां स
षांतत्वात्तेजोस्त्रिनाहिकायकं शान्तिनायेकं विदधा ॥ तेलदान ॥ वाक् ॥ तेलं धृष्टि
करीत्रित्वं आयुष्यं पापनाशनं ॥ अमंगलं हन्त्यस्य मग ४९ तं किं प्रयच्छम ॥
लोहदान ॥ वाक् ॥ तस्माद्यस्य कायानि त्वदधीना निमग्नं दा। लोहं लघुं लिकादीनि
अत ४९ तं किं प्रयच्छम ॥ ॥

वदार्चनं वृत्तकाव ॥ दानविषयमात्रं ध्यात्वा ॥ वाक् ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥
दा ॥ विष्णु ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥
॥ ॥ मां ॥ वाक् ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥
धीतवत्तु पूजा ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥
मां ॥ वाक् ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥
अथ यदानीं यमद्वयं लघुं दा ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥
गुणयानदानवाक् ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥ अङ्गुलिं धादि ॥ नमः ॥

ह्रियर्थं गुरुसंयुतः ॥ अंगारयु यततर्था यन्माहवति ॥ क्रयः ॥ ॥ युतपायदानदा ॥
षष्ठ्या विमृताया निदा ॥

मग ॥ मात्र ३ ॥ नो ॥ हाम्य जयजयना ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ ह्यो
थ हाहनग संज्ञन थमविमृति ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ जटनकृत वि
सुधरहित ॥ तत्तद्विरनयानरे ॥ विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥
संज्ञा ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥

इत्यादिदेवि मादोस ॥ ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥
गामात्र ३ ॥ नो ॥ हाम्य जयजयना ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥
मग ॥ मात्र ३ ॥ नो ॥ हाम्य जयजयना ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥
मग ॥ मात्र ३ ॥ नो ॥ हाम्य जयजयना ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥
मग ॥ मात्र ३ ॥ नो ॥ हाम्य जयजयना ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥
मग ॥ मात्र ३ ॥ नो ॥ हाम्य जयजयना ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥ स्यतदेव विहृतिद्वयं यमनरे ॥

प्रागाप्रात्र॥ न॥ तिरहितश्चेति नालाचिह्नम॥ तालनात्र॥ चद्रमजिह्वितं रं हारं नुमयहितं
 जेभयडाजाततिरुनस जनिप्राद्विनुजिधिनना॥॥ ५॥ श्रीवदकवृत्रभिन्नम
 रुंडामनसमिडामानः जेभयडाजाततिरुनस जनिप्राद्विनुजिधिनना॥॥ ५॥ श्रीवदकवृत्रभिन्नम
 ॥५॥ नत्रिनुमद्विमियास्याभिरुपुन जोगनदनहान्य॥ अप्राहडा ०० डाकुडुप
 हा ०० डाकुडुप वित्रयाहयासननप्रा

अथ वैतरणीदानं ॥ ॥ अथ ॥ ॥ भयादि ॥ यमहारे स्थित वैतरणी रत्नानुत्तरणी
गोदानमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ वासरां गां वगंधमात्यादिभिः संदज्य ॥ ॐ धेनुके
त्वं यतीक्षस्व यमहारे महायथे ॥ उत्तितीर्षु हरं देवी वैतरं रणेन मोक्षते ॥ इति धेनुप्रार्थनं ॥
॥ ॐ बिलुक्तयद्विजश्रेष्ठ भूदेव द्विजपावन ॥ तर्जु वैतरणी मेनां कृष्णां गां प्रददामहं ॥
इति वासरां प्रार्थनं ॥ ॐ अथेत्यादि ॥ वैतरणी संतरणी धर्मि मां गां कृष्णवस्त्ररक्तम
त्याद्यलंकृतां रुद्रदेवतां अमुक गोत्राया अमुक शर्मणे वासराण्यनुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ
यमहारे यथेद्योरेद्योरा वैतरणी नदी ॥ तर्जु कामो प्रयच्छामि कृष्णां वैतरणीं मु
गां ॥ इति योजनविस्तिर्णं महादातामहं ॥ तर्जु कामः प्रयच्छं त्वं वैतरणीं ददिवं

गतः ॥ ॥ इत्युक्त्वा विप्रहस्ते जलंदत्वं दक्षिणां द्रव्यमादाय ॥ ॐ अथेत्यादि वैतर
णी गोदानं प्रतिष्ठार्थं दक्षिणां हिरण्यमग्निदेवतां अमुक शर्मणे वासराण्यनुभ्य
महं संप्रददे ॥ वासरो न स्वस्ति तीर्थातिवचनं ॥ प्रतिग्राहिता गोपुच्छग्रहणं कृ
त्वा कोदादिति क्रयांस्तुतिं पठेत् ॥ कृष्णाभावे अन्यवर्णापि देया ॥ दानांतरं तु
॥ आद्यमंत्रे उत्तितीर्षु रथमिति पठेत् ॥ द्वितीये तर्जु वैतरणी मस्येति ॥ तृतीये तां
तर्जु मस्येति ॥ पृथग् तर्जु हिरण्यसहितं कृष्णयात्रदानं ॥ वाक्यं ॥
ॐ अन्यादि ॥ मम जन्मदुःखं त्वं मरणात्तत्कृतं नानाविधपापनाशार्थं सहि

ऊँसहिकामु। धृक् पृक् लृक् । नित्यं ॥ तत्सर्वनाशमायातु गामकां इदं
 तोममं ॥ विप्रहस्तं जलं दत्वा ॥ दानप्रतिष्ठा ॥ ॥ यायधेनु ॥ ऊँअद्येत्यादि ॥
 मनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्सर्वनाशमायातु गामकां इदं
 वतां ॥ ऊँ आजन्मो गतिं तया वं मनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्सर्वनाशमायातु गामकां
 दानेन केशव ॥ विप्रहस्तं जलं दत्वा ॥ दानप्रतिष्ठा ॥ ॥ इति यं वधेनु दानं ॥ ॥

मयस	दीप	माघ	फागुन	चैत्र	वैशाख
शंख	चक्र	पद्म	गङ्गा	चक्र	गङ्गा
पद्म	गङ्गा	शंख	चक्र	पद्म	गङ्गा

ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक
गङ्गा	चक्र	चक्र	गङ्गा	चक्र	गङ्गा
पद्म	शंख	शंख	पद्म	शंख	पद्म

अधीक मासया. गुगलाननावल. उ गुनंतुं देवजुल. लक्ष्मी दक्षं वराभय ॥
 अश्वेतवराहकृत्यैवैदस्वतमचंतरेकलियुगेयुधमवररोगजम्बू द्वीपेभरतख
 रोट आर्यावर्त देश हिमवत्या देश भूमतिसंनिधाने वाशुकीध्वजे वाग्मत्यादक्षि
 णाकूलेनेपात्त देशांतर्गत इहैव पुराण भूमौ ॥ अद्येत्यादि ॥ ॥ ॥ ॥

अथ दशदान विधि ॥ ॥ गो. भूतल. हिर. रत्नाज्य. वाशो. धान्य. गुडा. निचगा. रु.
प्यंल वरा मित्या. इ. दशदानान्यनुक्रमार. ॥ तिला. लोहं. हिरं. रत्नं. व. कर्षा. संल.
व. शांतथा. ॥ सप्तधान्यं क्षितिगो व. र. के. कं. यावनं. स्मृतं. ॥ अक्षदानं. ॥ ॥ ॐ.
अथादि. ॥ ॐ. शु. क. गो. र. स्या. मु. क. श. र्म. र. गो. आज्य. पु. भृति. अ. धा. व. धि. ज्ञा. ता. ज्ञा.
त. का. मा. का. म. स. सु. द. स. सु. दि. हि. त. का. यि. क. वा. रि. क. मा. न. सि. क. सां. सर्गि. क. स्य.
का. स्य. सु. भ. क्ता. भ. क्त. या. मा. या. महा. या. त. को. य. या. त. क. सं. करी. कर. रा. म. ली.
नी. कर. रा. अ. या. त्री. कर. रा. ज्ञा. ती. भं. डा. कर. रा. प्र. की. र्ण. क. या. य. क्ष. या. य. ह.
ह्वा. दि. य. त्या. म्ना. यी. भू. त. गो. म. ला. भू. त. मि. दं. द्र. यं. वा. स्त. रा. य. दा. त. म. र. र. र.

ज्ये. ॥ ॥ इ. मां. गां. रु. द्र. दे. व. तां. इ. मां. आ. वं. वि. श्व. दे. व. तां. ए. तां. रि. त. ला. दे. व. तां.
ता. न्. आ. ठ. क. य. रि. मि. ता. न्. इ. दं. सु. व. रा. मा. जि. दे. व. तं. इ. द. मा. जं. म. तुं. ज. य. दे. व.
तं. इ. दं. वा. शो. ह. ह. स्य. ति. दे. व. तं. इ. मा. नि. धा. न्या. नि. य. जा. य. ति. दे. व. ता. नि. अ. मुं. गु. तुं.
अ. ये. व. तं. इ. दं. रो. यं. सो. म. दे. व. तं. इ. दं. ल. व. रा. स. र्व. दे. व. तं. या. य. हा. म. हा. वि. श्व. प्री. त. ये. वा.
स्त. रा. य. दा. स्ये. ॥ इ. ति. दानं. ॥ दान. प्र. ति. स्था. द. क्षि. रा. ॥ ॥ इ. ति. दश. दान. ॥





